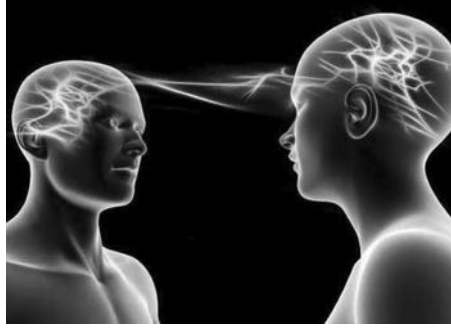


टेलीपैथी तकनीक के ज़रिए दिमागों को जोड़ना

दूसरे व्यक्ति के शरीर को टेलीपैथी के ज़रिए काबू करने में एक कदम आगे बढ़े हैं। इस नए प्रयोग में शोधकर्ता दो मस्तिष्क को कंप्यूटर के ज़रिए जोड़ पाए हैं। मानव वालंटियर अपने मस्तिष्क के ज़रिए चूहों की पूंछ को हिलाने-डुलाने में सफल रहे हैं।



दृश्य उत्तेजना के अनुरूप होते हैं। वालंटियर्स जब एक स्ट्रोब प्रकाश को कंप्यूटर स्क्रीन पर देखते थे तब स्ट्रोब की आवृत्ति और ईईजी तरंग की आवृत्ति मेल खाने लगती थी।

लेकिन जब वे चूहे की पूंछ को हिलाने पर ध्यान केंद्रित करते, तो

उनका स्ट्रोब पर ध्यान बाधित हुआ। कंप्यूटर ने इस संकेत को अल्ट्रासोनिक संकेत में बदल दिया, जिसने चूहे के मोटर कार्टेक्स को उत्तेजित किया इसके कारण पूंछ हिली-डुली। इस सिस्टम के इस्तेमाल से सभी छः वालंटियर चूहे की पूंछ को हिलाने-डुलाने में सफल रहे।

यू का कहना है कि भविष्य में इस तरह के सिस्टम मनुष्यों में भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं। इस तरह का सिस्टम फालिज के रोगियों के लिए मददगार हो सकता है।

मगर स्विस फेडरल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी के रिकार्डो और दूसरे शोधकर्ताओं का कहना है कि दो तकनीकों को जोड़कर बनाया गया प्रयोग निश्चित रूप से रोचक है लेकिन इससे दो मस्तिष्कों को जोड़ने की क्षमता के बारे में कुछ पता नहीं चलता। जब चूहा बेहोश था तब तो इस प्रयोग का प्रभाव दिखाई दिया लेकिन जब दिमाग सचेत है तब क्या होगा इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। अभी यह भी स्पष्ट नहीं है कि क्या व्यक्ति की मंशा के अनुरूप कार्य होता है। यू का कहना है कि उनकी टीम इस बाबत और प्रयोग कर रही है। (स्रोत फीचर्स)

हाल ही में शोधकर्ताओं ने दो चूहों के मस्तिष्क को जोड़ा। इसके ज़रिए दोनों चूहों ने मिलकर एक काम को अंजाम दिया। लेकिन मनुष्यों में इस तकनीक का उपयोग कठिन होगा क्योंकि इसके लिए मस्तिष्क में शल्य-चिकित्सा के ज़रिए इलेक्ट्रोड्स वगैरह प्रत्यारोपित करने होंगे।

बोस्टन स्थित हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के स्यूंग-शीक यू और उनके साथियों ने एक ऐसा सिस्टम बनाया है जिसमें मस्तिष्क में कोई इलेक्ट्रोड लगाए बिना कंप्यूटर के ज़रिए मनुष्य और चूहे के मस्तिष्क को जोड़ा जाता है।

मानव वालंटियरों को इलेक्ट्रोड टोपी पहनाकर इलेक्ट्रोएनसेफेलोग्राफी (ईईजी) के ज़रिए मस्तिष्क के क्रिया-कलापों पर नज़र रखी गई। दूसरी ओर, बेहोश किए गए एक चूहे को एक ऐसे उपकरण से जोड़ा गया जो अल्ट्रासोनिक ध्वनि संकेत मिलते ही चूहे की तंत्रिकाओं में उत्तेजना पैदा करता था।

मनुष्यों के मस्तिष्क के क्रियाकलापों पर निगरानी करते हुए शोधकर्ताओं ने ईईजी के उस पैटर्न पर ध्यान दिया जो